गिलहरी का गीत

जोआन रैडर, चित्र : लयने चेरी, हिंदी: आरती जैन

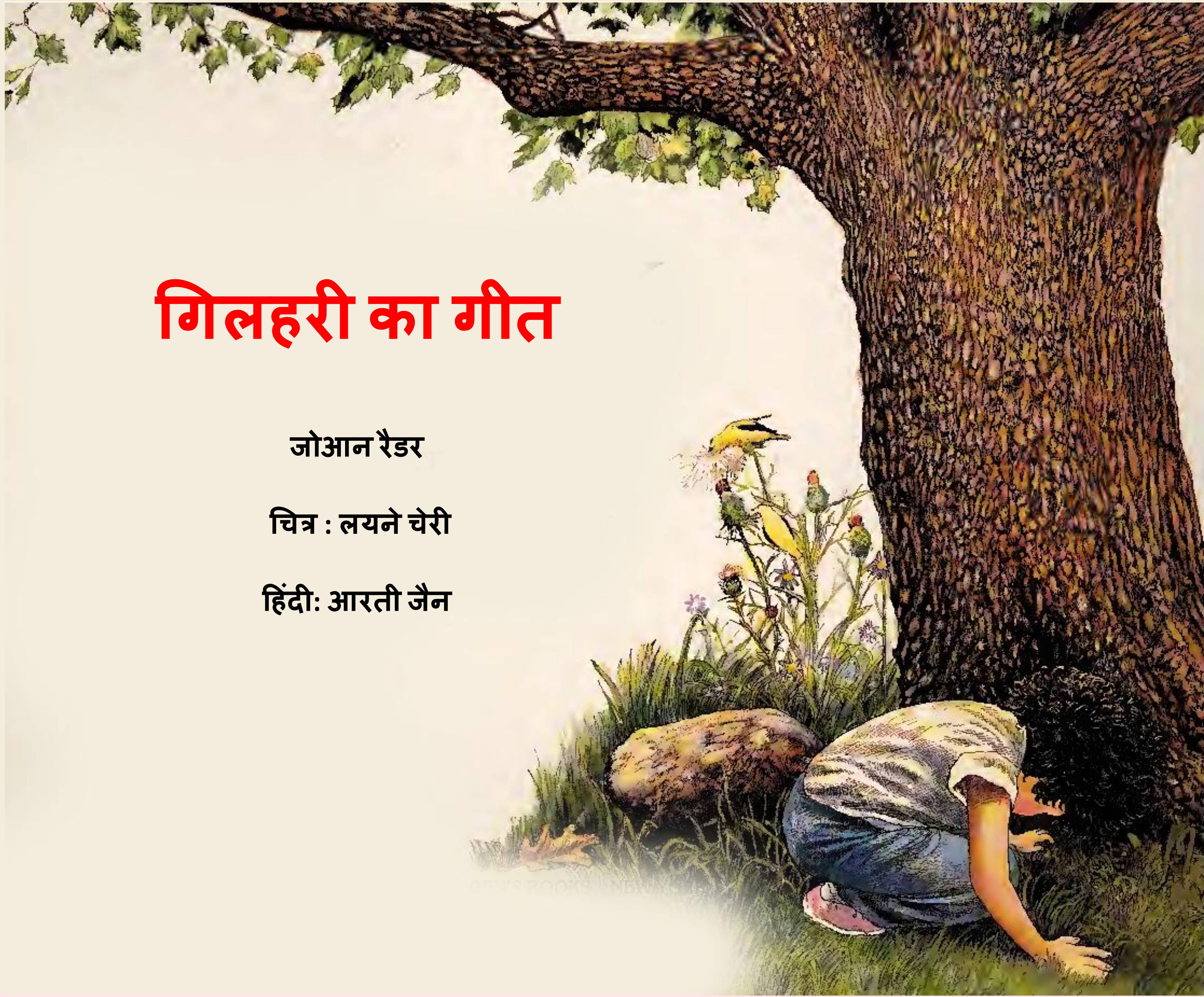


गिलहरी का गीत

जोआन रैडर

चित्र : लयने चेरी

हिंदी: आरती जैन





पेड़ों के नीचे
घास के नीचे
ज़मीन की गहराई में
छोटे जीव रहते हैं
अंधकार में।



तुम हो छोटे से

पत्तो के बिछोने पे सोते हुए भूमिगत

एक कोने अँधेरे कमरे में

जागो छोटे जीव

नहीं देख सकते तुम

सूरज को महसूस कर सकते हो

सुबह की हलचल अपने भीतर



दौड़ते हुए एक गुफा से,
जो छोटी सी तुम्हारी है
तुम चढ़ते हो
ऊपर और ऊपर
एक रौशनी
जो है ठीक तुम्हारे ऊपर।

तुम प्रतीक्षा करते हो
और सुनते हो
पक्षियों को
जो धीरे-धीरे
एक-दूसरे से पुकारते हैं।
वे सुरक्षित महसूस करते हैं।



तुम बाहर निकलते हो
रोशनी में
जो चारों ओर फैली है।
तुम देखते हो
इधर और उधर
खतरे के लिए—
कूदते, रेंगते,
या उड़ते हुए।
पर कोई नहीं आ रहा।

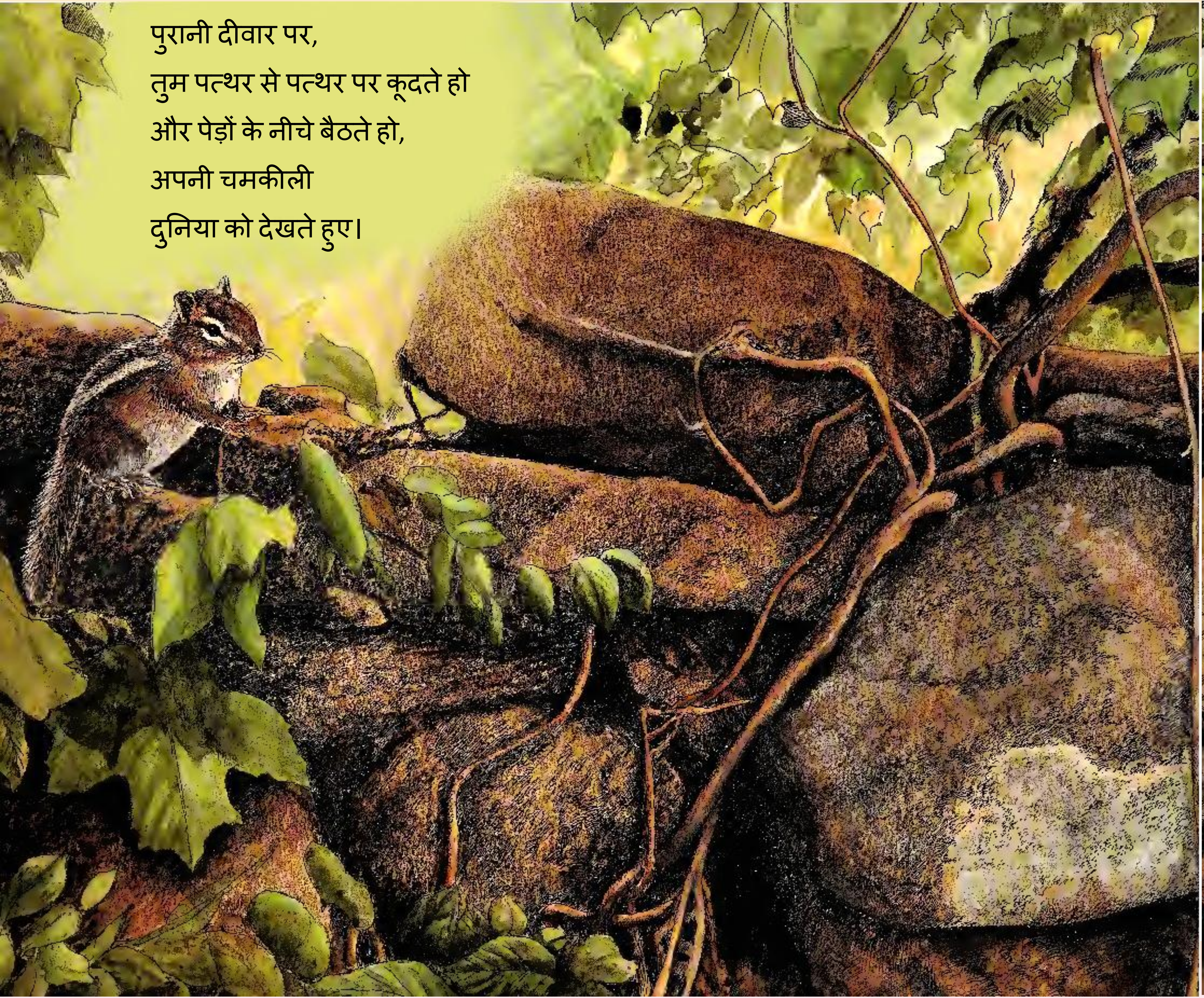


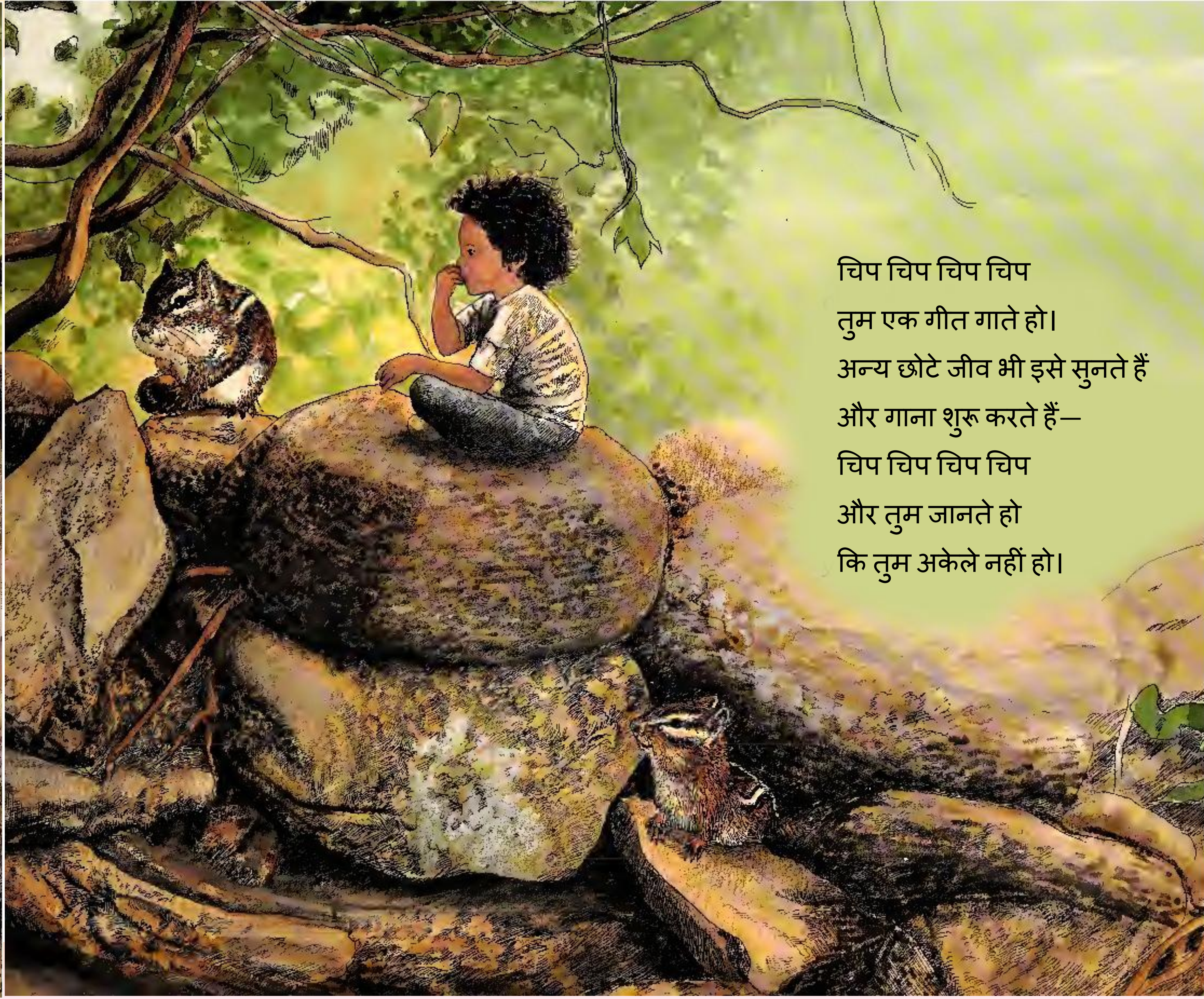


तो तुम दौड़ते हो—
तेज़ी से भागते हुए,
यहाँ रुकते, वहाँ रुकते,
खाने की तलाश में,
खतरे पर नज़र रखते हुए।

तुम तेज़ हो—
एक चट्टान पर कूदते हुए,
एक झाड़ी के नीचे फिसलते हुए
जहाँ आख़िरी चमकीले जामुन लटके हैं।
तुम ऊँचा खिंचते हो
मीठे जामुन खाने के लिए,
हर एक को पकड़ते हुए
अपने रोएँदार पंजों में।

पुरानी दीवार पर,
तुम पत्थर से पत्थर पर कूदते हो
और पेड़ों के नीचे बैठते हो,
अपनी चमकीली
दुनिया को देखते हुए।





चिप चिप चिप चिप
तुम एक गीत गाते हो।
अन्य छोटे जीव भी इसे सुनते हैं
और गाना शुरू करते हैं—
चिप चिप चिप चिप
और तुम जानते हो
कि तुम अकेले नहीं हो।

सिर के बल
तुम नीचे उतरते हो
भूरी ज़मीन पर
जहाँ धूप
छाया में
चमकीली धारियाँ बनाती है।

तुम भूरे हो
सूखे पत्तों जैसे,
भूरी मिट्टी जैसे
जो तुम्हारे चारों ओर है।
तुम भूरे,
नरम और रोएँदार हो।





एक काली छाया
ज़मीन पर फिसलती है।
तुम स्थिर पड़े रहते हो
भूरी ज़मीन पर
एक भूरे पुतले की तरह,
जब तक बाज़
पेड़ों के ऊपर से
बिना देखे उड़ जाता है।



फिर तुम दौड़ते हो—
धप-धप-धप
तुम्हारा दिल धड़कता है
एक छोटी से घड़ी की तरह
जो तुम्हारे भीतर है।

तुम वहाँ दौड़ते हो
जहाँ मोटे आड़ू गिरे हैं।
तुम एक आड़ू
अपने रोएँदार गाल में भर लेते हो,
फिर दूसरा, और एक और!

भरे हुए थैलों की तरह
तुम्हारे गाल
आड़ू से फूल जाते हैं।
तुम घर की ओर दौड़ते हो
जब तक तुम
घास के एक छोटे से छेद में
गायब नहीं हो जाते।

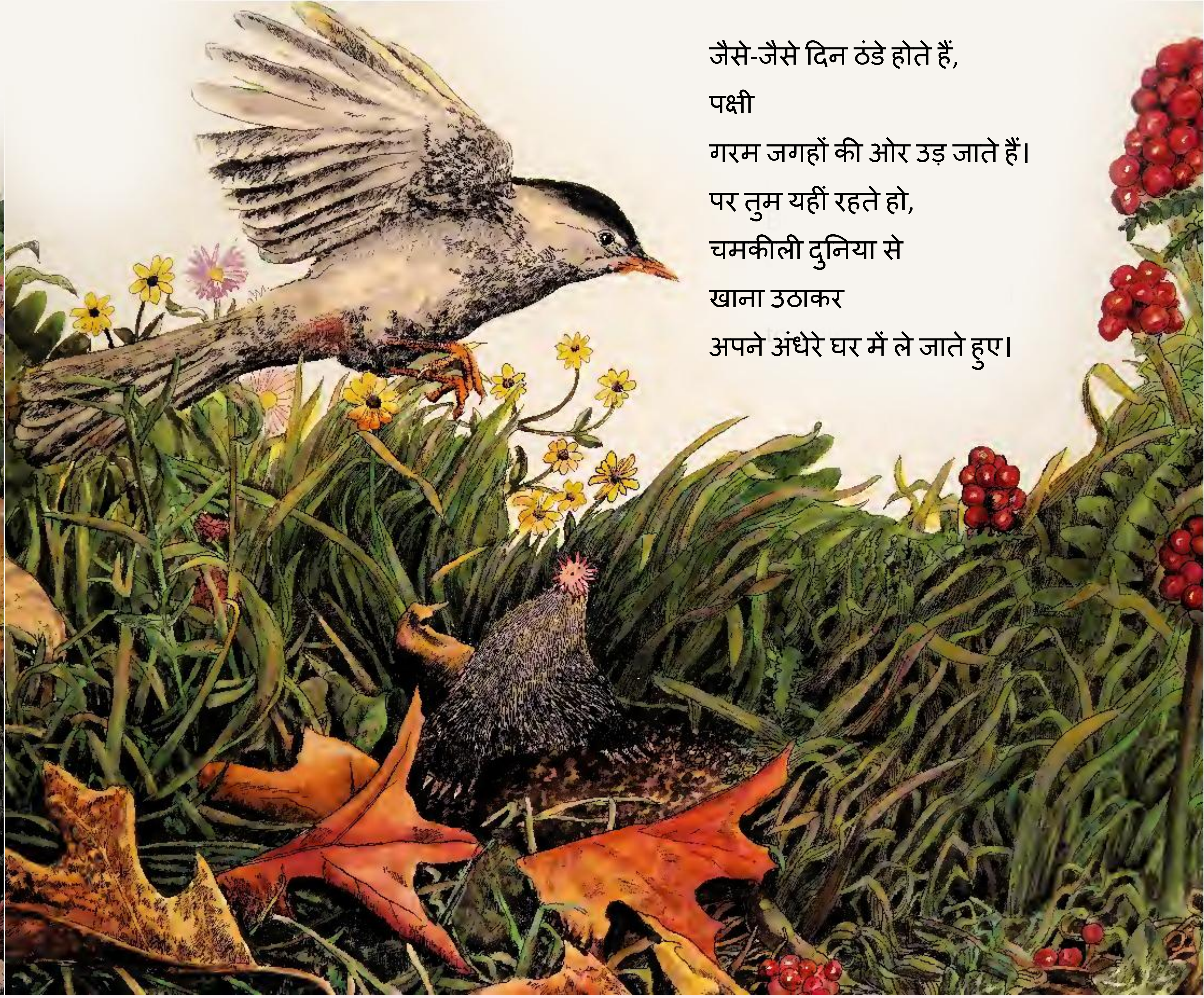


जब तुम बाहर आते हो,
तुम्हारे गाल खाली होते हैं।
तुम गर्म धूप में बैठते हो
और अपने पंजे चाटते हो
अपने गंदे चेहरे को साफ़ करने के लिए।

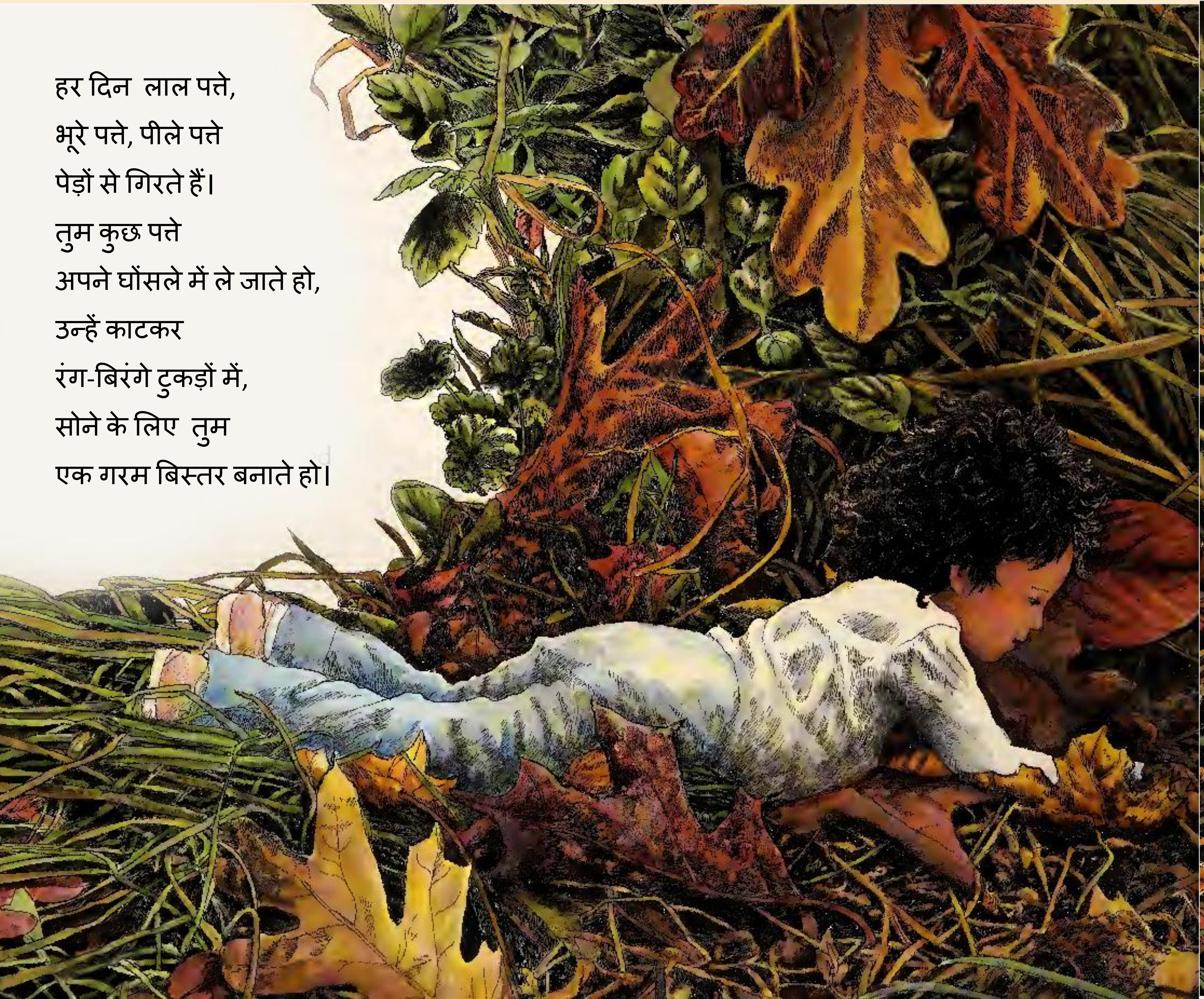
दिन भर
तुम जंगल की ओर दौड़ते हो,
अपने गाल भरे हुए
आड़ू से,
उन्हें अपने घर में
भूमिगत छिपाने के लिए।



जैसे-जैसे दिन ठंडे होते हैं,
पक्षी
गरम जगहों की ओर उड़ जाते हैं।
पर तुम यहीं रहते हो,
चमकीली दुनिया से
खाना उठाकर
अपने अंधेरे घर में ले जाते हुए।



हर दिन लाल पत्ते,
भूरे पत्ते, पीले पत्ते
पेड़ों से गिरते हैं।
तुम कुछ पत्ते
अपने घोंसले में ले जाते हो,
उन्हें काटकर
रंग-बिरंगे टुकड़ों में,
सोने के लिए तुम
एक गरम बिस्तर बनाते हो।



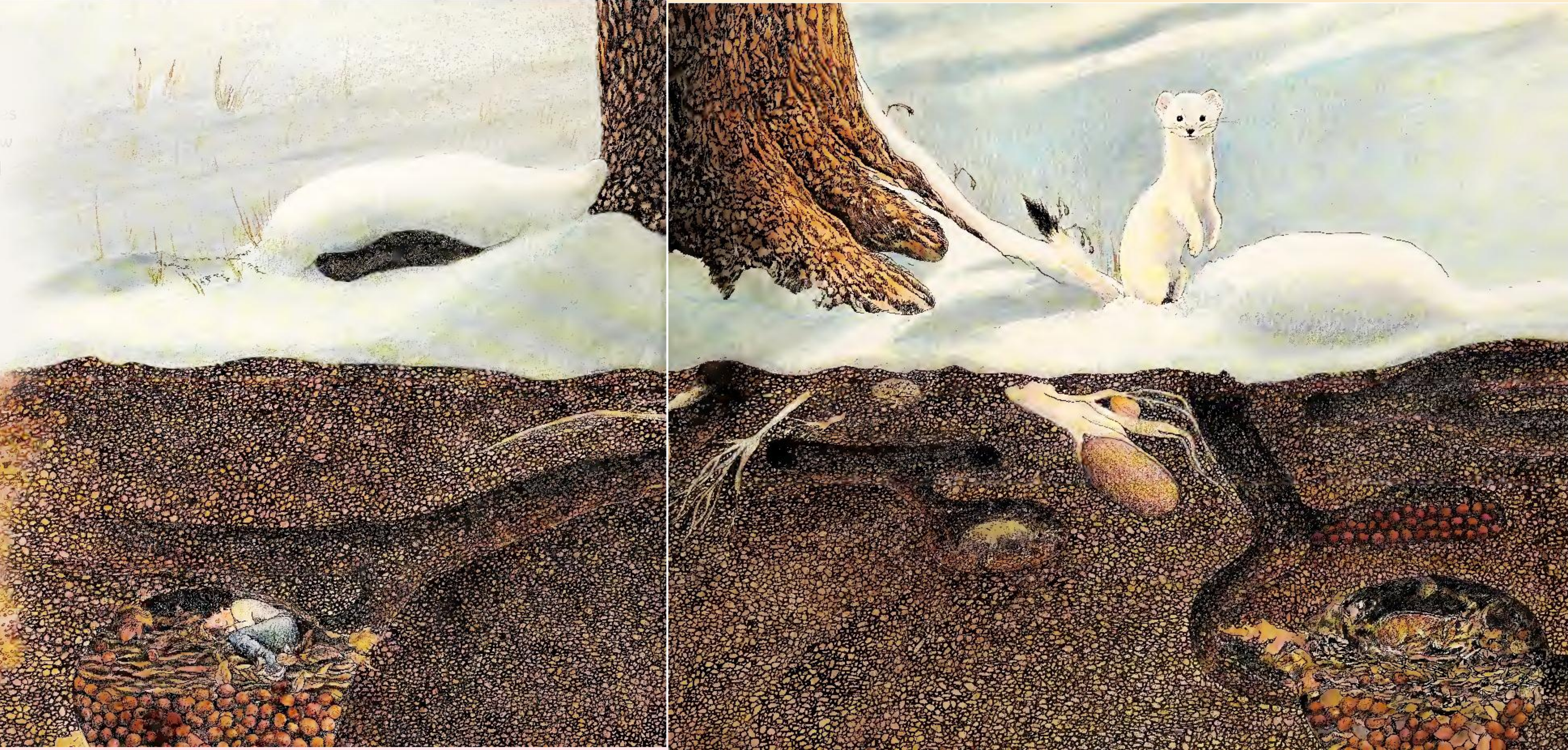




एक ठंडे दिन
तुम अपने अंधेरी
सुरंग के अंदर ही रहते हो।
तुम अपने
चमकीले द्वार को
मिट्टी से भर देते हो।

नंगे पेड़ों के नीचे
ठंडी बर्फ़ के नीचे
ज़मीन की गहराई में
छोटे जीव सोते हैं
अंधकार में।

धप! धप! धप!
हल्के, धीरे बजते
एक छोटे ढोल जैसे
तुम्हारा दिल जाड़ों
में दिन-रात धड़कता है,
सोते समय।



कभी-कभी
तुम सिमटते हो
और अपने रोएँदार
पैर फैलाते हो।
अंधेरे में
तुम खोदते हो
और अच्छी चीजें
खोजते हो
और फिर खाते हो
मोटे ऐकॉर्न।





बहुत नींद में
और खाने का मन नहीं होता।
फिर तुम एक
 रोएँदार गेंद बनकर
सिमट जाते हो
और विश्राम करते हो।

सुरक्षित धरती के भीतर,
तुम प्रतीक्षा करते हो
वसंत के गरम दिन की
जो तुम्हें पुकारे
ऊपर
और ऊपर
रोशनी की ओर।

